सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

कवि परिचय :– महाप्राण कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 1899 में बंगाल राज्य के महिबादल नामक रियासत के मेदिनीपुर जिले में हुआ। जब निराला तीन वर्ष के थे, उनकी माता का देहांत हो गया। आपने स्कूली शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं की, परन्तु स्वाध्याय द्वारा अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। पिता की मृत्यु के बाद आप रियासत काल की पुलिस में भर्ती हो गये। आप का विवाह मनोहरा देवी से हुआ। आप के एक पुत्र तथा एक पुत्री हुए। 1918 में आप की पत्नी के देहांत हो गया। आर्थिक संकटों, संघर्षों ने निराला जी के जीवन की दिशा बदल दी। आप रामकृष्ण मिशन अद्वैत आश्रम बैलूर मठ चले गये। वहाँ आपने आश्रम के पत्र समन्वय का संपादन किया। सन् 1935 में आपकी पुत्री सरोज का निधन हो गया। इसके बाद आप टूट गये और बीमारियों से ग्रस्त हो गये। 15 अक्टूबर 1961 ई० में आप का देहांत हो गया।

बादल राग

पाठ का सार :– कवि का कहना है–जैसे समुद्र पर हवा होती है, वैसे ही हमारे अस्थिर सुख पर दुःख की छाया होती है। कवि का कहना है–जैसे बादलों का आगमन बीजों को नव जीवन देता है, वर्षा से बड़े–बड़े पहाड़, वृक्ष आदि प्रभावित होते हैं, परन्तु छोटे पौधे विकास को प्राप्त होते हैं। वर्षा के कारण जब बाढ़ उत्पन्न होती है, तब कीचड़ बह जाता है। केवल छोटे कमल के फूल फलते–फूलते हैं। जैसे छोटे बच्चे बीमारी में भी खुश रहते हैं, कुछ इसी प्रकार क्रान्ति की आवाज गूँजने पर निम्न व शोषित वर्ग प्रसन्न हो उठते हैं, क्योंकि पूंजीपतियों व उच्चवर्ग के लोगों ने उनका बहुत शोषण किया है। इस कारण उन का सन्तोष आज क्रोध में बदल गया है और क्रान्ति होने को है। क्रान्ति होने पर पूंजीपति व शोषक वर्ग भयभीत हो गये हैं तथा किसान व मजदूर प्रसन्न हैं, क्योंकि उनको अब नव जीवन मिलेगा। अर्थात् जैसे बादल नवजीवन देने वाले हैं, वैसे ही क्रान्ति भी शोषित वर्ग को नवजीवन देती है।

तिरती है समीर–सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया –
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया –
यह तेरी रण–तरी
भरी आकांक्षाओं से
घन, भेरी–गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं ऐ विप्लव के बादल !

शब्दार्थ :– समीर = वायु, अस्थिर = अस्थाई, दग्ध = जले हुए हृदय पर, निर्दय = कठोर, विप्लव = बाढ़, प्लावित = पानी से भरा, रणतरी = युद्ध की नौका, आकांक्षाओं = इच्छाओं, भेरी गर्जन = युद्ध में बजने वाले नगाड़े की आवाज, सजग = जागरूक, सुप्त = सोया हुआ, अंकुर = बीज, नवजीवन = नया जीवन, ताकना = अपेक्षा से एकटक देखना

व्याख्या :– कवि कहते हैं– जैसे समुद्र पर हवा तैरती है, वैसे ही सुख अस्थाई है। उन पर दुख मंडराते रहते हैं। जब संसार के लोगों के हृदय दुख से जलने लगते हैं, तब कठोर डुबा देने वाली क्रांन्ति होती है। व्यक्ति की इच्छाएँ युद्ध नौकाओं जैसी होती हैं। जब व्यक्ति की इच्छाएँ बहुत अधिक दबाई जाती हैं, तब क्रान्ति होती है।

कवि ने क्रान्ति को वर्षा के बादलों की तरह कहा है। कवि कहते हैं कि जब वर्षा के बादल गर्जते हैं, तब पृथ्वी के नीचे सोये हुए बीज जागरूक हो जाते हैं, इस आशा से कि उन्हें अब नव जीवन मिलेगा। बीज अपना सिर ऊँचा कर के परिवर्तन करने वाले बादलों को देख रहे हैं, अर्थात् व्यक्ति को जब अपनी इच्छाएँ दबानी पड़ती हैं, तब वो क्रान्ति के बादलों की तरफ देखने लगते हैं, इस आशा में कि क्रान्ति होगी तो उन्हें नया जीवन मिलेगा। व्यक्ति अपना सिर ऊँचा कर के क्रान्ति के बादलों को देख रहे
हैं।

भाषा सौन्दर्य :–

1. तत्सम शब्द युक्त खड़ी बोली जैसे–समीर, अस्थिर, निर्दय, दग्ध, विप्लव, रण–तरी, आकांक्षा, सजग, सुप्त आदि
2. छन्द मुक्त रचना
3. वीर रस, ओज गुण
4. समीर, सागर, दुख की छाया –रूपक अलंकार
5. सजग सुप्त–अनुप्रास अलंकार
6. बीजों का मानवीकरण किया गया है – मानवीकरण अलंकार

फिर फिर
बार–बार गर्जन
वर्षण है मूसलाधार
हृदय थाम लेता संसार
सुन सुन घोर वज्र हुंकार
अशनि पात से शापित उन्नत
शत शत वीर
क्षत विक्षत हत अचल शरीर
गगन स्पर्शी स्पर्धा धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार
शस्य अपार
हिल–हिल
खिल–खिल
हाथ हिलाते
तुझे बुलाते
विप्लव रव में छोटे ही हैं
शोभा पाते ।

शब्दार्थ :– वर्षण = बारिश, मूसलाधार = जोर से बारिश, बज्र हुंकार = वज्र के समान आवाज, अशनि पात = बिजली गिरना, शापित = शाप ग्रस्त, उन्नत = विशाल, क्षत–विक्षत = घायल, अचल = पर्वत, गगन स्पर्शी = आकाश को छूने वाले, लघुसार = हलके, शस्य = हरे, रव = आवाज

व्याख्या :– बार–बार बादल गर्जते है और फिर जोर से बारिश होने लगती है । बादलों की वज्र के समान कठोर आवाज सुन कर लोग दिल थाम लेते है तथा बिजली गिरने से विशाल शरीर वाले शापग्रस्त हो जाते हैं । आकाश को छूने वाले पर्वत टूट फूट जाते हैं । छोटे–छोटे पौधे प्रसन्न हो जाते हैं तथा हरे भरे हो जाते हैं। छोटे–छोटे पौधे प्रसन्नता से बादलों को बुला रहे हैं । घोर वर्षा के समय छोटे पौधे शोभा पाते हैं, अर्थात् बार–बार क्रान्ति की आवाज गूँजती है तथा एक दिन क्रान्ति हो जाती है । क्रान्ति की कठोर आवाज सुन कर लोग अपना हृदय थाम लेते हैं । बडे–बडे पूंजीपति सत्तारूढ़ शोषक शापग्रस्त हो जाते हैं तथा क्रान्ति से प्रभावित होते हैं, परन्तु सर्वहार, निम्न वर्ग के लोग किसान, मजदूर प्रसन्न हो जाते हैं, क्योंकि जब क्रान्ति की आवाज गूंजती है तब निम्न वर्ग शोभा पाता हैं ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली । तत्सम शब्द–वर्षण, वज्र, हुंकार, अशनिपात, क्षत विक्षत, स्पर्शी, स्पर्द्धा वीर, शस्य, विप्लव, रव आदि
2. छन्द मुक्त रचना
3. ओज गुण, वीर रस
4. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है मानवीकरण अलंकार 5. प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग जैसे बादल–क्रान्ति के प्रतिक, छोटे पौधे–सर्वहारा वर्ग
6. बार–बार, शत्–शत्, हिल–हिल, खिल–खिल, पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
7. हृदय थामना, हाथ हिलाना–मुहावरे

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक–भवन
सदा पंक पर ही होती
जल विप्लव–प्लावन
शुद्ध प्रफुल्ल जलज से
सदा छलक्ता नीर
रोग शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर

शब्दार्थ :– अट्टालिका = महल, आतंक–भवन = भय का निवास, पंक = कीचड़, प्लावन = बाढ़, क्षुद्र = लघु, प्रफुल्ल = कमल, शोक = दुःख, शैशव = बच्चा

व्याख्या :– कवि कहते है बाढ़ आने पर सदा कीचड़ बह जाता है । छोटे–छोटे कमल के फूलों पर पानी रूकता भी नहीं है । जैसे बीमार होने पर भी छोटे बच्चे हँसते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार क्रान्ति होने पर महलों में रहने वाले पूंजीपति सत्ताधारियों के घर भय के घर बन जाते हैं, क्योंकि क्रान्ति का प्रभाव पूंजीपतियों व सत्ताधारियों पर होता है । कमजोर, बीमार, तुच्छ, सर्वहारा वर्ग क्रान्ति के होने पर प्रसन्न हो जाता है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग–पंक–शोषक वर्ग का प्रतीक, प्रफुल्ल व शैशव–सर्वहारा वर्ग का प्रतीक
4. अट्टालिका, पंक, विप्लव, प्लावन, प्रफुल्ल जलज शैशव तत्सम शब्द ।
5. प्रकृति का मानवीकरण–मानवीकरण अलंकार

रूद्ध कोष है क्षुब्ध तोष
अंगना–अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी वज्र–गर्जन से बादल
त्रस्त नयन–मुख ढाँप रहे हैं
जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही है आधार
ऐ जीवन के पारावार !

शब्दार्थ :– रूद्ध = बंद, कोष = खजाना, क्षुब्ध = क्रोधित, तोष = सन्तोष, अंगना = पत्नी, वज्र गर्जन = वज्र के समान कठोर आवाज, जीर्ण = जर्जर, शीर्ण = कमजोर, हाड़–मात्र = हड्डियों का ढ़ांचा

व्याख्या :– पूँजीपतियों ने खजाने को बंद कर के रखा है तथा दूसरों की पूंजी को भी सुरक्षित रख रखा है । इतनी धन सम्पदा होने पर भी वो सन्तुष्ट नहीं है । क्रान्ति होने के कारण ये पूंजीपति भयभीत हैं और अपनी पत्नियों के अंगों से लिपटे हैं तथा भय से इन्होंने अपनी आँखै ढ़क रखी हैं । जर्जर भुजाओ वाले, कमजोर शरीर वाले कृषक व्याकुल हो कर आप को बुला रहे हैं, क्योंकि इन क्रान्ति वीरों का बहुत शोषण हुआ है । ये केवल हड्डियों का ढांचा मात्र रह गये हैं । हे जीवन प्रदान करने वाली क्रान्ति ! तुम उस समुद्र के समान हो, जो नव जीवन दोगे सर्वहारा वर्ग को अर्थात् किसानों व मजदूरों को ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली । तत्सम शब्द–रूद्ध, कोष, क्षुब्ध, तोष, वज्र, त्रस्त, जीर्ण, शीर्ण, कृषक, विप्लव, पारावार आदि
2. छन्द मुक्त रचना
3. अंगना–अंग, आतंक–अंक–अनुप्रास अलंकार
4. ऐ जीवन के पारावार–रूपक अलंकार
5. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है मानवीकरण अलंकार

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में 'दुख की छाया' किसे कहा गया है और क्यों ?
उत्तर :– कवि का कहना है दुख अस्थिर है, क्योंकि सुखी हो कर भी व्यक्ति दुखों के विषय में सोचता है । कवि का कहना है सम्पन्न व पूंजीपतियों के पास सब कुछ है, फिर भी वह भयभीत व दुखी रहते हैं कि क्रान्ति होगी तो उनका क्या होगा ।

प्रश्न 2. 'अशनि पात से शापित उन्नत शत–शत वीर' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?
उत्तर :– वर्षा के समय जब बिजली गिरती है तथा बड़े आकार वाले पर्वत शाप ग्रस्त हो जाते हैं, बिजली गिरने से टूटफूट जाते हैं, ठीक इसी प्रकार क्रान्ति होने पर बड़े–बड़े पूंजी पति प सत्ताधारी भयभीत हो जाते हैं, क्योंकि क्रांन्ति के कारण ये धराशाही हो जाते हैं ।

प्रश्न 3. 'विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति में विप्लव रव से क्या तात्पर्य है ? 'छोटे ही हैं शोभा पाते' ऐसा क्यों कहा गया है ?
उत्तर :– रव का अर्थ है आवाज़ । कवि का कहना है जब क्रान्ति की आवाज गूंजती है, निम्न वर्ग व सर्वहारा वर्ग लाभ प्राप्त करता है । क्रान्ति होने पर सम्पन्न एवं पूंजीपति लोग अपनी सम्पदा खो देते हैं एवं गरीब मजदूर किसान अपने अधिकार पाते हैं, अर्थात् छोटे ही शोभा पाते हैं ।

प्रश्न 4. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन–किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है ?
उत्तर :– बादलों के गर्जने पर पृथ्वी के नीचे सोये बीज सचेत हो जाते हैं, इस आशा में कि अब उन्हें नवजीवन मिलेगा । बीज इस आशा में अपना सिर उठाते हैं कि उन्हें नवजीवन मिलेगा । तेज वर्षा होने पर बिजली गिरने से ऊँचे ऊँचे पर्वत टूट फूट जाते हैं, परन्तु छोटे–छोटे पौधे प्रसन्न हो जाते हैं, हरे–भरे हो जाते हैं । तेज वर्षा होने पर बाढ़ आ जाती है । परिणाम स्वरूप कीचड़ बह जाता है और छोटे छोटे कमल के फूल प्रसन्न रहते हैं ।

प्रश्न 5. 'बादल राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।
उत्तर :– बादल राग कविता में बादल क्रान्ति के प्रतीक हैं । कवि का कहना है जैसे बादल बरसते हैं तो ब्रड़े–बड़े पहाड़ टूट जाते हैं परन्तु छोटे पौधे हरे–भरे हो जाते हैं, ठीक वैसे ही क्रान्ति होने पर पूंजीपति वर्ग प्रभावित होता है तथा सर्वहारा वर्ग फलता फूलता है अर्थात् शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक है ।

प्रश्न 6. 'बादल राग' कविता में कवि ने बादलों के बहाने क्रान्ति का आह्वान किया है । इस कथन की समीक्षा कीजिए ।
उत्तर :– यह सच है कवि ने बादलों के बहाने क्रान्ति का आह्वान किया है । बादल क्रान्ति के प्रतीक हैं । कवि का कहना है जब क्रान्ति के बादल बरसते हैं, तब पूंजीपति वर्ग क्रान्ति हीन हो जाते हैं, सर्वहारा वर्ग फलता फूलता हैं अर्थात् वास्तव में बादल के माध्यम से क्रान्ति का आह्वान किया है ।

* * * * *